

Shri Gauri & Shri Ganesha Puja

Date : 18th Septemer 1988
Place : Mumbai
Type : Puja
Speech : Hindi
Language

CONTENTS

I Transcript

Hindi	02 - 09
English	-
Marathi	-

II Translation

English	-
Hindi	-
Marathi	10 - 13

ORIGINAL TRANSCRIPT

HINDI TALK

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari

सृष्टि की रचना की शुरुआत जिस टंकार से हुई उसी को हम ब्रह्माणाद अर्थात् ओंकार कहते हैं। इस टंकार से जो नाद विश्व में फैला वो नाद पवित्रता का था। सबसे प्रथम परमात्मा ने इस सृष्टि में पवित्रता का संचार किया। सर्व वातावरण को पवित्र कर दिया। चैतन्य रूप आज भी आप जान सकते हैं। उसे महसूस कर सकते हैं। वही ओंकार चेतन स्वरूप आपको भी पवित्र कर रहा है। श्री गणेश की पूजा हर पूजा में हम लोग करते हैं। और आज तो उन्हीं की पूजा का बड़ा भारी आयोजन आप लोगों ने किया है। लेकिन जब हम किसी की पूजा करते हैं तो हमारी विविध प्रकार की मांगें होती हैं। कुछ लोग कामार्थी होते हैं कुछ लोग पैसा मांगते हैं। कुछ लोग कहते हैं हमारा कार्य ठीक से हो जाये। कुछ कहते हैं कि हमारी दुनियां में बड़ी शोहरत हो जाये। हमें बड़ा मान मिले। कोई कहता है कि हमारी नाकरी अच्छे से चले। कोई कहता है कि हमारा बिजनेस चलना चाहिए। कोई कहता है कि हमारे मकान बनने चाहिए। ये सब कामार्थ की बातें हैं। और इसी तरह की मांगों के लिए मनुष्य गणेश की पूजा करता है। यहां पर जो सिद्धि विनायक है उनकी भी जागृति मैंने बहुत साल पहले की थी। सब लोग सिद्धि विनायक के पास जाकर कहते हैं हमें यह चीज दे दो, हमें वो चीज दे दो, लेकिन यह सिद्धि विनायक है। ये चीजे देने वाला नहीं है। उसके लिए बहुत से, दुनिया में चमत्कार करने वाले बैठे हैं जो आपको हीरे दे देंगे, पत्रे दे देंगे और आपका सर्वस्व छीन लेंगे। ओंकार स्वयं निराकार है उसका कोई आकार नहीं है। सो सर्वप्रथम जो श्रीगणेश का आकार था वो निराकार था। आज हम उनकी साकार में पूजा करते हैं। लेकिन सहजयोगियों को जानना चाहिए कि हमारे जीवन का अन्तिम लक्ष्य क्या है? हम क्या चाहते हैं उसकी पूर्ति हमने की है? हम किसलिए सहजयोग में आये हैं? इसलिए आये हैं कि हमारी तन्द्रुस्ती ठीक हो

जाये, हमारा बिजनेस ठीक हो जाये और हमें बड़ी मान्यता मिले। चुनाव में जीत जाये। यह तो सभी मांगते हैं। इसमें कौन सी विशेषता है? लेकिन सहजयोगियों को सोचना चाहिए कि आज जो हम एक नये स्तर पर खड़े हैं एक नई मंजिल पर खड़े हुए हैं तो इससे हमें क्या पाने का है और हमारी क्या इच्छा है? फिर यह बात आती है कि जिस गणेश को आप आज पूजते हैं साकार में, उसे निराकार में प्राप्त करना है। उसको अपने अन्दर प्राप्त करना है अपने अन्दर बिठाना है। यह नहीं कि गये और उनको फूल चढ़ा आये। ये तो सभी करते हैं। उनकी पूजा कर ली। माँ की भी पूजा हो गयी। गौरी की भी पूजा हो गयी। लेकिन उनकी शक्ति आप अपने अन्दर समाहित कर सकते हैं। आप उससे अपने चित्त को, अपने मन को, बुद्धि को, वाणी को भी शुद्ध कर सकते हैं। लोगों को भी आप ये शक्ति दे सकते हैं। ये गणेश ही ने आपको बनाया। जिस तरह से हमने गणेश को बनाया उसी तरह से आत्मसाक्षात्कार देकर आपको बनाया। उसमें कोई फर्क नहीं। एक ही तरह से, एक ही ढंग से बनाया। लेकिन यहां गणपति के नाम पर जो दंगे हो रहे हैं इसलिए पूना में आजकल बरसात हो रही है। और तब तक बरसात होनी चाहिए जब तक गणपति विसर्जित नहीं हो जाते। विसर्जन करने की जरूरत नहीं रह जानी चाहिए। वहाँ भीग-भाग कर विसर्जित हो जाएंगे। गणपति उत्सव के मैने जो किसी सुने तो मैं आवाक रह गयी कि गणपति के सामने शराब पीते हैं। वहाँ बैठ कर शराब पीते हैं। गन्दे-2 गाने गाते हैं। उसके आगे गन्दे-2 नृत्य करते हैं। और सब गन्दी तरह की औरतें वहाँ जमों रहती हैं। और सब तरह के धन्दे करते हैं। ये तो गणपति की विडम्बना हो गयी।

लोकमान्य तिलक ने बताया था कि गणेश उत्सव को सामाजिक बना दीजिए। संगीत तथा व्याख्यान मालाओं से लोगों

में एक तरह का जागरण हो जाए। पर ये तो अच्छे भले लोगों को खराबी के रास्ते पर ले जाने की पूरी व्यवस्था हो गयी है। जितना बड़ा गणपति उतना ही वहां पाप ज्यादा। और ऐसे गणपति के सामने पाप करने से वो कोई छोड़ेंगे? वो इन लोगों को छोड़ने वाले नहीं। और जब तक हम बैठे हैं ठीक है, लेकिन बाद में वो ठिकाने लगा देंगे। क्योंकि वो जानते हैं कि कहां—2 काम करना है। और कहां मेहनत करनी है। अब मुझे यही डर रहता है कि होने क्या वाला है। पुण्य—पटनम जिसे कहते हैं। एक पूणे शहर में वैसे ही एक राक्षस बैठा हुआ है। और भी बहुत सारे वहां इकट्ठे हो गए हैं। उसके अलावा ये जो गणपति के नाम पर अनाचार शुरू कर दिया है। मनुष्य के अहंकार ने उसका इतना पतन कर दिया कि वो भगवान के नाम पर हर तरह की बुराइयां करता है। बिल्कुल बेशर्म जैसे। उन्हें कुछ मालूम नहीं कि क्या आफत आ सकती है। आज हम बहुत धर्म—धर्म करते घूम रहे हैं लेकिन धर्म का जो हाल है उसका तो किसी को ध्यान ही नहीं। अब धर्म को राजकरण में लाने क्या फायदा? धर्म ही धर्म नहीं रहा।

गणपति को जब आप लोग पूजते हैं तो आपको पता होना चाहिए कि आप सहजयोगी हैं। आप योगीजन हैं। ऋषि और बड़े महान लोगों को भी जो नहीं मिला वो आपको आज सर्वसाधारण तौर पे मिला है। सब को मिला है। रास्ते पर आ गए। सब कुछ पा लिया। लेकिन जब हम कोई बात कहते हैं तो आप लोग अपनी तरफ कभी भी नहीं देखते। आप सोचते हैं कि मैं ये बात किसी और को कह रही हूँ। ये नहीं सोचते कि हम भी उसी में से हैं। कि हमारी दृष्टि कहां है। हम क्या सोचते हैं? माता जी देखिये— ये मैं एक घर ले रहा हूँ इसको आप आशीर्वाद दीजिए। अरे भई तुम हो तो वहां आशीर्वाद तो होना ही हुआ। अच्छा नहीं माता जी देखिये मेरी चाबी जो है मोटर की आप इसे आशीर्वाद दीजिए। तो चाबी लिए खड़े हैं। मैं तो ऐसा आशीर्वाद दूंगी कि गाड़ी चलेगी ही नहीं। और फिर जबरदस्ती कर रहे हैं कि आप मेरे घर आओ। मेरे घर नहीं आओगे तो ये होगा और फिर वहां जाकर हम सुनेंगे कि मेरा बिजनेस ऐसा है, वैसा है। ये सहजयोगियों के

लक्षण नहीं हैं। सहजयोग जो करते हैं उनको याद रखना चाहिए कि हमें निराकार में उतरना है। यानि आप निराकार नहीं होने वाले। साकार में रहते हुए आप निराकार के ही पूरी तरह से माध्यम बनने वाले हैं। तो सर्वप्रथम हमने अपने अन्दर गणेश जी को जगाना है। सिर्फ पूजा मात्र ही नहीं हमें उसे अगर जगाना है तो सर्वप्रथम हमें देखना चाहिए कि हमें शुद्ध होना है। हमारे अन्दर शुद्धता आनी चाहिए।

सबसे पहली शुद्धता है कि हमारी जो मौलिक बातें हैं उसकी ओर ध्यान देना है। आजकल सिनेमा और आजकल की सब चीजें आने से हमारी आंखें तक खराब हो गयी। और वो अबोधिता, वो निश्छल और निर्वाज्य त्याग संसार से मिट गया है। कोई सोच भी नहीं सकता कि ऐसा कोई क्या कर सकता है। और इस उधेड़ बुन में मनुष्य रहता है कि किस तरह से हम इस कार्य को ऐसा करें कि जो सहजयोग भी चलता रहे और हमारे ये धन्य भी चलते रहें। जैसे कल एक औरत कहने लगी कि मेरे पति एक दूसरी औरत के पीछे पड़ गए। मैंने कहा उसको छोड़ो। नहीं वो कहते हैं मैं तो परम सहजयोगी हूँ। मुझे कैवल्य मिल गया है माता जी से मेरा ओर सम्बन्ध है और ये सम्बन्ध मेरा ओर है। मगर मच्छ के ऊपर चढ़कर आप पार नहीं उतर सकते। और जो लोग इस तरह के कामों में और इस चीज में अभी उलझ रहे हैं उनको उचित है कि वो सहजयोग छोड़ कर के हमें रिहाई दें। और अपने से छुट्टी पाएं। उनको जो होना है वो होगा ही लेकिन सहजयोग बेकार में बदनाम होगा। अभी अगर चित्त इस तरह से उलझता है तो समझ लेना चाहिए कि बिल्कुल ही बुनियादी चीज को आपने नहीं अपनाया है। हमारे सहजयोगियों को भी समझना चाहिए कि हमें किस तरह से अपनी शक्ति को अपने अन्दर पूर्णतया जीवित रखना चाहिए। और किस तरह से हमें अपनी पवित्रता पर अपनी कुंवारी अवस्था पर, अपनी गौरी स्थिति पर गर्व होना चाहिए। क्योंकि ये स्त्री की शक्ति है। अगर स्त्री की शक्ति छिन जाती है तो फिर ऐसी स्त्री किसी काम की नहीं रह जाती। इसीलिए ऐसी स्त्री को कोई पूछता भी नहीं और उसे मानता भी नहीं। हालांकि आजकल आप लोग दुनिया में देखते हैं कि बहुसंख्य लोग

ऐसी औरतों को मानते हैं जो बिल्कुल गंदगी से लबालब हैं। जिनमें पवित्रता छुई भी नहीं। अतः ये बहुसंख्य नर्क की ओर जा रहे हैं। इनका जो हाल होने वाला है वो मुझे आज ही दिखाई दे रहा है। बहरहाल आप बहुसंख्य नहीं हैं। आप अल्पसंख्य हैं। और आपकी स्थिति और है। इसलिए जान लीजिए कि इस तरह के कामों में उलझना आपको बिल्कुल शोभा नहीं देता। पर अभी भी मैं देखती हूँ कि कुछ लोगों का चित्त इधर-उधर बहुत घूमता है। हमारी नैतिकता ठीक होनी आवश्यक है। पर हिन्दुस्तानियों में नैतिकता का बल कम है लेकिन भौतिकता का बल वहाँ जबरदस्त है। भारत के लोग भौतिक चीजों के पीछे पड़े हैं। गणपतिपुले में भी लोग कहते हैं कि साहब हमें ये चीज मिली है पर अभी तक ये चीज नहीं मिली। ये भी दे दीजिए। कितना ओछापन है? सब पैर की ठोकर पर होना चाहिए। जब तक ये शान आपके अन्दर नहीं आएगी तो आप कहां के सहज योगी हो सकते हैं। तुकाराम को देखिए। राजा जनक को देखिए। राजा थे— तो राजा बनकर रहते थे। जब तक आपके अन्दर ये भौतिकता भरी हुई है आपका पहला चरण मंदिर में नहीं आ सकता। ठीक है मां देना चाहती हैं क्योंकि इसी तरह से तो मैं जता सकती हूँ कि मैं आपको प्यार करती हूँ। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि मेरे लिए वो बहुत बड़ी चीज है। बहुत बार शब्दों से नहीं कहा जा सकता। मेरे कटाक्ष को आप समझ नहीं सकते। तब हो सकता है चीजों से ही मैं जाहिर करना चाहती हूँ कि मैं आपके साथ हूँ और आप मेरे साथ हैं। आप मेरे बच्चे हैं। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि आप पागलों जैसे भौतिकता पर जुड़े रहें। अगर माँ ने छोटी सी भी चीज दी है तो उसको बहुत ऊंचा समझ कर सर पर रखना चाहिए।

श्री गणेश की तरह मनुष्य को अपना चित्त स्वच्छ कर लेना चाहिए। चित्त स्वच्छ करने का तरीका ये है कि चित्त कहां है आपका—चित्त अगर परमात्मा में है तो शुद्ध है। क्योंकि चैतन्य आप में बह रहा है। अगर चित्त आपका इधर-उधर है तो उस चित्त का फायदा क्या? जब तक आपका चित्त शुद्ध नहीं होगा तब तक आप ज्ञान को प्राप्त ही नहीं कर सकते। चित्त में ही आपका सारा चैतन्य बह

रहा है। जिसका शुद्ध चित्त होता है सिर्फ विचार मात्र से कार्य हो सकता है। ध्यान देने से ही कार्य हो सकता है और कभी-2 तो उसकी भी जरूरत नहीं होती। जिस स्थिति को आप प्राप्त करना चाहते हैं, अपना लक्ष्य जिसे आप प्राप्त करना चाहते हैं, वो चैतन्य जिसे आप अन्दर बसाना चाहते हैं, जिसके अन्दर ये शक्ति है, जिस शक्ति के कारण आप अनेक कार्य कर सकते हैं, उसको छोड़ करके आप क्यों बेकार चीजों के पीछे पड़े हैं। सहजयोग में आकर भी चित्त, पैसे कमाने में, अपनी बीमारी ठीक करने में लगा रहता है। उसके बाद चित्त उठा तो ज्यादा से ज्यादा ये कि माँ के दर्शन होने चाहिए। जगह जगह से लोग आ जाते हैं कि माँ के दर्शन करने हैं। दर्शन नहीं होते तो लड़ पड़ते हैं सबसे। दर्शन तो तुम्हारे हृदय में ही हो सकते हैं। अरे, तुम को इतनी शक्ति दे दो उसके ही दर्शन करो, बहुत है। हम तो शक्ति ही हैं ना। हम को निराकार में तुमने प्राप्त नहीं किया है। इसलिए दर्शन चाहिए। बैठ करके घंटो इधर की बात उधर की बात, समय बरबाद करना। क्या जरूरत है। शक्ति स्वरूप होने में आप स्वयं शक्ति हो सकते हैं। लेकिन ये रुकावटें कब जाएंगी और कब हम समझेंगे कि हम स्वयं वो शक्ति स्वरूप हो सकते हैं और हमारे अन्दर इतनी शक्तियां हैं। उनके अन्दर हमें रमना चाहिए। जिसके कारण कुछ भी ना करते हुए सारा काम हो जाए। लेकिन ये विचार दिमाग में नहीं आता। अज्ञान, ममता, मोह माया ने जकड़ा हुआ है। सहजयोग में आने के बाद आपका जीवन बदल गया। आप दूसरे खानदान में चले गए। आपका घर बदल गया। आपका गोत्र बदल गया। आपकी जाति बदल गयी। आपका धर्म बदल गया। आप पूरी तरह से बदल करके एक नये व्यक्ति हो गए। नये मानव हो गए हैं क्योंकि आपकी माँ ने आपको जागृति दी है। तो आप सब पूरी तरह से बदल गए। जैसे एक गणेश जी को बनाने से हमारे हजारों काम, करोड़ों काम हो जाते हैं क्योंकि उनके अन्दर पूर्णतया माँ में ही श्रद्धा, माँ के प्रति पूर्णतया शरणागत होना ही उनका ध्येय है। सो जब तक वो शुद्धता हमारे हृदय में नहीं आएगी, जब तक हमारे मन में हम उस शुद्धता को प्राप्त नहीं करेंगे तब तक वो श्रद्धा आएगी ही नहीं। ये तो ऐसा ही है कि जब

तक आप गंगा पर नहीं जाएंगे और उसमें गंगरी नहीं डुबाएंगे और गंगरी के अन्दर जगह नहीं होगी तो उसमें पानी कैसे आएगा। सो जरूरी है कि हम अपने चित्त को शुद्ध करें। और चित्त को शुद्ध करके, उस शुद्ध चित्त को हम अपनी माँ को दे सकते हैं। अशुद्ध चोज से तो हमें तकलीफ ही होती रहती है। और जब शुद्ध चित्त होता है तो आपको आश्चर्य होता है कि आप स्वयं ही एक पुष्प की तरह महकते रहते हैं। और आपको देख करके मैं भी बहुत प्रसन्न हो जाती हूँ। वाह क्या मेरा बेटा खड़ा हुआ है। क्या मेरी बेटी खड़ी हुई है। ओर कोई भी चीज मुझे प्रसन्न नहीं कर सकती। व्यर्थ की आधुनिकता को प्राप्त कर लेना गणेश की ओर से मुंह मोड़ लेना है। उनको क्या बात है, वो तो पुरातन हैं और हम भी बहुत पुरातन हैं। इसलिए अगर आप हमारे बेटे हैं और हमारी बेटियाँ हैं तो जिस संस्कृति को हम पुरातन मानते हैं उसी से आपको चलना होगा और रहना होगा। आधुनिक पहनावे बहुत खराब दिखाई देते हैं। विदेशी सहजोगी भी कहते हैं आप हमें आज्ञा दे दो हम साड़ियाँ और कुर्ते पायजामे पहन कर घूमेगें। लेकिन हमारे यहां उल्टा है। तो जो गणेश की संस्कृति है इसका अन्तरभाव है सौन्दर्य। अब आप देखिए ऐसे तो वो बहुत मोटे हैं। उनका तौंद इतना बड़ा है। महाकाय हैं गणेश। इतने मोटे दिखाई देते हैं। लेकिन उनका सौन्दर्य क्या है। किस चीज का आकर्षण है? लोकमान्य तिलक ने क्यों गणेश जी की मूर्ति को माना? ऐसे तो महाराष्ट्र में लोग विट्ठल-2 करते रहते हैं सुबह से शाम तक। वहां के विट्ठल भी उठ गए। यहां तो विट्ठल की बीमारी है सबको। तम्बाकू खाकर। लेकिन क्यों लोकमान्य तिलक ने श्री गणेश को ही पूजा और क्यों वो ही सारे सृष्टि की जितनी भी सुन्दरता है उसे बनाते हैं? उनका कौन सा स्थायी भाव है जिसके बगैर श्रीराम, श्रीकृष्ण, ईसा मसीह या बुद्ध या कोई भी सौन्दर्य में नहीं उतर सकते थे। वो कौन सा उनके अन्दर भाव था। उनका स्वभाव एक बालक का स्वभाव है। जिसमें अबोधिता है। पूरी अबोधिता उसके अन्दर भरी हुई है। ये ही चीजें हैं जो सबसे मोहक और सुन्दर होती हैं। ना कि आपकी चालाकी और आपका बनना-ठनना। लेकिन जो अबोधिता श्री गणेश की है, वही सारे सौन्दर्य की

सृष्टि सारे संसार में है। अतः जो आनन्द है इस आनन्द के प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम आपको गणेश जी जैसे होना चाहिए। उसकी ओर कौन ध्यान देता। आज पूजा के बाद भी आप सोचिएगा कि हमें गणेश जी जैसे अबोध होना चाहिए। चलो कोई आपको ठग भी ले। हमें भी बहुत लोग कहते हैं कि मां आप बहुत सीधी हैं। आप बहुत भोली हैं। आपको लोग ठग लेते हैं। मुझे ठगने वाला अभी तक पैदा नहीं हुआ। लेकिन मैं अपनी माया में उनको धोड़ी देर जरूर दिखाती हूँ कि तुम लोग मुझे ठगो। जिससे मैं जानूँ तो सही कि तुम कैसे ठग हो। नहीं तो मैं जानूँगी कैसे की ठगी क्या होती है। लेकिन मुझे तो मालूम ही नहीं की ठगी क्या चीज होती है। जब ये मुझे ठगते हैं तब मुझे पता चलता है कि ये ठग हैं और ये ठगी होती है। फिर उधर चित्त देने से वो ठग भी खत्म हो जाता है और ठगी भी। सो जरूरी है कि मनुष्य को वह भोलापन सीखना चाहिए। शंकर के लिए भी यही कहा जाता है कि उनमें भोलापन है। कौन से ऐसे देवता हैं जिनमें भोलापन नहीं है? देवी के लिए कहते हैं कि जिस वक्त उनको बहुत क्रोध आया और उन्होंने सारी सृष्टि का संहार करने का विचार कर लिया तो सब लोगों में हा हाकार मच गया कि जब मां ही बिगड़ गयी तो अब क्या होगा हमारा। सबको लगा कि अब तो सर्वनाश हमेशा के लिए हो जाएगा। और फिर से सृष्टि की रचना नहीं होगी। उस वक्त शंकर जी को एक बात सूझी कि उन्हीं के बच्चे को उनके पैर के नीचे डाल दिया कि मारना है तो इसी बच्चे को मारो। इतनी बड़ी जीभ उनकी निकल आयी। बाप रे मैं अपने बच्चे को ही मिटा रही हूँ। ये बच्चों के लिए सभी के हृदय में लाड़-प्यार उमड़ता है। ईसा मसीह ने कहा है कि तुम को अगर परमात्मा के साम्राज्य में जाना है तो छोटे बच्चों जैसे तुम्हें होना चाहिए। यही गणेश की पूजा है कि आप में अबोधिता हो, बच्चों की तरह आप निर्मोह हों। सभी कुछ आपके लिए खेल सम हो। बालसम भोलापन आपमें हो। आत्मसाक्षात्कार को पाकर भी यदि गणेश की श्रद्धा और समर्पण शक्ति की अगर हम प्राप्त नहीं कर सकते तो बाकी सब करना तो व्यर्थ ही है एक तरह से मेरे ख्याल से बिल्कुल ये उस मशीन की तरह है जो मंत्र

कह डाले। उनका मंत्र जरूर कहा कीजिए। लेकिन मेरे ख्याल से गौरी की पूजा ठीक रहेगी। वे कुण्डिलनी हैं। वो आपको उठाती है। गणेश को आप साकार ही में देख सकते हैं निराकार में देख नहीं पाते। क्योंकि अभी तक आपने गौरी का संचालन नहीं किया और गौरी का आसरा नहीं लिया आप सिर्फ गणेश को ही देखना चाहते हैं। आज गौरी का ही दिन है। ऐसा कुछ इतिहास है कि सहजयोग में हमेशा सहूलियत से पूजा होती है। मुहूर्त पे नहीं होती। कुछ भी हो सहूलियत होनी चाहिए। रविवार का दिन होना चाहिए और वो टाइम होना चाहिए जब फिल्म न आ रही हो। अगर ये हमारी स्थिति है तो क्या फायदा गणेश जी की पूजा करने का? अगर हमारा चित्त ऐसी ही चीजों में उलझा हुआ है तो आप लोग ये समझ लीजिए कि इसका कोई इलाज हम नहीं कर सकते। इसका कोई इलाज नहीं। सो चित्त हर समय देखते रहना चाहिए कि इसमें कौन से विचार खड़े हो रहे हैं। उस पर नामदेव ने कहा है कि जैसे एक छोटा बच्चा हाथ में पतंग की डोरी लिए हुए सब से बात कर रहा है और हंस रहा है, मजाक कर रहा है, लेकिन उसका चित्त पूरा उस पतंग की ओर है। उसी प्रकार एक योगीजन को अपना चित्त पूरा उस पतंग पर रखना चाहिए। अपने आत्मा पे। नहीं तो ये सारी शक्तियां जो दी हुई हैं उनको कोई पूर्ति नहीं हो सकती। उसका कोई प्रादुर्भाव नहीं हो सकता। लोग पूछते हैं कि माँ ऐसा क्यों होता है जैसे कि आप जानते हैं कि आकाश में और अन्तराल में फैकी जानी वाली चीजें एक के अन्दर एक बिठाई जाती हैं। पहले विस्फोट की शक्ति से जब यान एक हद तक पहुंचता है तो उसमें दूसरा विस्फोट होकर उसे ऊपर ढकेलता है। इस प्रकार ये विस्फोट उसकी शक्तियों को बढ़ाते रहते हैं। ऐसे ही विस्फोट हमारे अन्दर क्यों नहीं होते? क्योंकि अभी भी हम दस पैसे में खरीदे जाने वाले गणपति जैसे ही हैं। अगर असली गणपति हों तो उसका विस्फोट होना चाहिए। और लोगों को पता चलना चाहिए कि एक-एक आदमी क्या कमाल का है। पर ऐसा नहीं होता है। हम अपनी ही चीजों में उलझे रहते हैं अपनी ही बातों में, अपने ही बारे में सोचते हैं। हर समय सोचते हैं कि इसमें हमारा क्या लाभ है?

सहजयोग में आने से असल में पूरा ही लाभ है क्योंकि जिस वक्त आप अपने सिंहासन पर बैठ गए तो पूरा राज आपका ही है। लेकिन आप सिंहासन पे न बैठकर हर दरवाजे जाकर भीख मांगें तो आप तो भिखारी ही रहे। आपको सिंहासन पर बैठने का फायदा क्या। और सिंहासन पर बैठकर भी आप कहेंगे कि मां अब थोड़ा रुपया-पैसा दे दो तो इस चीज का क्या प्रभाव है? गणेश की शक्ति अगर अपने अन्दर जागृत करनी है तो सबसे प्रथम जानना चाहिए कि हमें निराकार की ओर चित्त देना चाहिए। चैतन्य की ओर चित्त देना चाहिए और चैतन्य जो हमारे अन्दर बह रहा है उसको देखना चाहिए। जिनका चैतन्य दूषित है वो ये ही कहेगा मुझे भूत लग गया। गणेश को कभी भूत नहीं लगता। तुम को तो मैंने अपने शरीर में स्थान दे दिया। ऐसा तो किसी ने नहीं किया होगा। बड़ी तकलीफें उठाती हूं आपकी सफाई के लिए। लेकिन आप लोग अपनी सफाई नहीं कर सकते। आकर लोग कहेंगे माँ मेरा आज्ञा पकड़ गया। मुझे अहंकार हो गया, क्यों हुआ? उसकी वजह ये है कि अपने दोषों को हम नहीं देखते हैं। दूसरे लोगों को कहते हैं कि ये तुम्हारा काम है। और ये तुम्हारी वजह से है। यदि श्री गणेश को पता चल जाए और मेरी नजर अगर उन पर नहीं हो तो सबको ठिकाने लगा दें। मैं आपको बता रही हूं इतने वो माहिर हैं, होशियार हैं, सतर्क हैं, दक्ष हैं कि जानते हैं, कहां पर कौन बैठा है। मुझे भी सब मालूम है ये नहीं की मुझे नहीं मालूम। लेकिन, मैं सुरक्षित रखना चाहती हूं आपको। लेकिन वो नहीं। वो कहते हैं कि बेकार के लोगों को क्यों माँ के पीछे लगाना। वो तो ऐसे ही ठिकाने कर दें। लेकिन सबसे बड़ी चीज जो मेरी समझ में नहीं आती कि ये सब होने के बाद भी आपकी वाणी शुद्ध नहीं होती। वाणी में बहुत से लोग गालियां देते हैं। अभी भी सहजयोग में चीखते हैं, चिल्लाते हैं, जोर से बोलते हैं। उसमें प्रेम माधुर्य कुछ है ही नहीं। इसका मतलब आपकी वाणी भी शुद्ध नहीं। और ऊपर से दिखावा जिसे कहना चाहिए कि हम बड़े मुस्करा रहे हैं। बड़े हंस रहे हैं बहुत ही खुश हो रहे हैं। और अन्दर से तो मैं देख रही हूं उनका हृदय ही स्वच्छ नहीं। वो जो असली आनन्द का मजा है उसकी चमक ही और होगी। और

हम से तो छुप नहीं सकती वो। आप कुछ भी पोत कर आइये, हम पहचान जाएंगे कि आप कितने गहरे पानी में हैं। लेकिन हम भी आपको क्यों परखते हैं? किस वजह से परखते हैं? इतनी मेहनत क्यों करते हैं? क्योंकि हम चाहते हैं कि आप लोग सब चमक जाएं। लेकिन जब तक आपके मन में अपना हित न आए, जब तक आप अपने अन्तिम लक्ष्य की पूर्ति की तरफ ध्यान न दें और फालतू चीजों में उलझे रहें, ऐसा नहीं हो सकेगा। अन्तर्दर्शन करने से हमारा चित्त ऊपर की ओर जाता है और हमारे अन्दर चैतन्य बहने लगता है। एक दो आदमियों को अलौकिक करना तो बहुत आसान चीज है। लेकिन मैं तो चाहती हूँ कि सामूहिकता में हम लोगों का उत्थान हो। आज उसकी जरूरत है। नहीं तो सोचें की ये समाज कहाँ जा रहा है। एक से एक चोर उच्चके बैठे हुए हैं। सारी दुनिया भर की परेशानियाँ लोगों को लगी हुई हैं। और इसके अलावा इतनी अनैतिकता माने घोर कलियुग है। क्या आप अपने बच्चों को खत्म कर देना चाहते हैं? या जिस विशेष महान कार्य के लिए आप इस संसार में आये हैं उसे करना चाहते हैं? आपकी सारी समस्याएं हल हो गई पर अभी लालच खत्म ही नहीं हो रहे। और उसके लिए भी मुझे परेशान करना हर समय। मुझसे सिर्फ सहजयोग पर ही प्रश्न करने चाहिए। और कोई सा भी दूसरा प्रश्न करना गलत है। आपके अन्दर सृजन शक्ति है, विचार शक्ति है। आपके अन्दर वो शक्ति है जिससे आप दुनिया को चमका सकते हैं। तब आप क्यों बार-बार ये चाहते हैं कि मैं ही इस बात पर बताएँ। आप स्वयं प्रश्न का उत्तर दे सकते हैं। आपको अपने बच्चों से प्यार है तो उनमें शक्ति का संचार करो। वो बच्चे कमाल के हो जाएंगे। हो ही जाएंगे। अगर आपको अपने घर से प्यार है तो उसमें शक्ति का संचार करो मंदिर हो जाएगा। आपकी बुद्धि में अगर कोई दोष है या आपको हर समय सवालात बहुत दिमाग में आते हैं आप उसमें शक्ति का संचार करो सब चीजों का उत्तर आपके सामने आ जाएगा। आपको मुझसे पूछने की जरूरत क्या है। आदिशंकराचार्य को क्या मैंने जाकर बताया था? तुकाराम को क्या मैंने जाकर बताया था? सबसे तो बड़ा ज्ञानेश्वर जी को, उनकी किताबें पढ़ो तो आश्चर्य

लगता है। कभी उन्होने मुझे साकार में देखा नहीं। लेकिन उन्होने शक्ति पर बल दिया है। अगर आप अभी भी इसी साकार स्वरूप से ही तृप्त हैं तो आप आगे नहीं बढ़ सकते। आपको निराकार में हमें प्राप्त करना होगा जिससे कि आपके अन्दर की सृजन शक्तियाँ बढ़ें। श्री गणेश की शक्ति के संचार से हम स्वयं ही मुक्त हो जाते हैं। हम कितनी बार कहते हैं कि हम स्वयं के ही गुरु हैं। लेकिन ऐसे कितने लोग हैं जो अपनी टांगों पर खड़े होकर कह सकते हैं कि हाँ मैं ये चीज है इसका हमारे पास उत्तर है? हमों से उसका उत्तर मांगते हैं और जब वो देने लग जाते हैं उत्तर तो ऐसे उत्तर होते हैं कि सारी दुनिया निरुत्तर हो जाती है। क्योंकि जो उत्तर देते हैं इतने अहंकार भरे। इतने बेवकूफी के कि समझ में नहीं आता कि ये सहजयोगी हैं अश्रद्धावान लोगों को नुकसान होता है।

हम कहते हैं कि—हे परमात्मा हमें अपना माध्यम बना लीजिए। पर इन दोषों के रहते हुए वो कैसे हमें अपना माध्यम बना सकते हैं? उनके माध्यम बनने के लिए हमारे अन्दर सारी शक्तियाँ हैं। हमारे अन्दर जागृति है। हम उनके बारे में जितना जानते हैं कोई भी नहीं जानता था। सहस्रार के बारे में किसी ने लिखा तक नहीं। वो भी हम जानते हैं। सारी चीज आज हमारे सामने पुस्तक के जैसे खुली हुई है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं की पुस्तक को पढ़ने से ही हो जायेगा। मंत्र के कहने से ही आप शक्तिशाली नहीं हो सकते। मंत्र का जो स्थायी भाव पवित्रता है उसकी ओर चित्त का होना आवश्यक है। दोनों में समांजस्य का होना आवश्यक है। जैसे की हाथ में पतंग हो और उड़ान उसकी ऊपर हो। इसी प्रकार जब तक आपके जीवन में न हो कि हमारी उड़ान कहाँ है। बहुत से लोग ये कहते हैं कि मैं हमें परमात्मा से साक्षात्कार कब होगा? यह मैं कैसे कह सकती हूँ? अपना क्रोध जिस आदमी के काबू नहीं हो सकता वो क्या सहजयोग करेगा? कृष्ण ने क्रोध की सबसे पहले बुराई की। क्रोध सबसे खराब चीज है। सम्मोहन लाने वाली चीज है। सो हमारे अन्दर जो गणेश की शक्ति है उसे जागृत करने में ये सोचना चाहिए कि हम पवित्र हों और पवित्रता में उनका सौन्दर्य स्वरूप जो

भोला स्वरूप है उसे लेना चाहिए। पर लोग कहते हैं कि हम गणेश है। उनका फर्सा लेकर हम किसी को मार सकते हैं। वो शक्ति आपके पास नहीं है। वो फर्सा आपके हाथ में नहीं है। वो शक्ति जिस दिन आप में आएगी तो आपके हाथ में फर्सा दिया जाएगा। अभी तो आप ही का भूत आपको मार रहा है। आप भूत हैं जो आप चीख रहे हैं, चिल्ला रहे हैं और गुस्सा कर रहे हैं। दूसरों को मार रहे हैं। ये गणेश शक्ति हो ही नहीं सकती क्योंकि आपको पता ही नहीं कि आप किस पर चिल्ला रहे हैं? क्यों चिल्ला रहे हैं? क्या कर रहे है? जिस आदमी का इस तरह से दिमाग खराब है उसे सहजयोग छोड़ कर पागलखाने में चले जाना चाहिए। उसका स्थान यहां पर नहीं। जो आज का भाषण है उसमें धार है। उसी फर्से की। समझ लीजिए आप। ये हमें अधिकार है, आपको अधिकार नहीं कि आप इस फर्से को दुनिया भर में घुमाते फिरें। सहजयोग में जो भी आदमी ऐसा होता है उस पर दुनिया धूकती है, हंसती है, मजाक करती है, पीठ पीछे उसकी निंदा करती है और ऐसे लोग सहजयोग से बहुत जल्दी घाट उतर जाते हैं। अपनी वाणी अत्यन्त सुन्दर, स्वच्छ होनी चाहिए, अच्छी होनी चाहिए, मधुर होनी चाहिए। पर उसके पीछे छल-कपट नहीं होना चाहिए। बात हृदय से कहनी चाहिये और जब हृदय से बात कही जाती है तो बड़ी गुणकारी होती है क्योंकि हृदय जो है ये ही सब चीज को समाता है। वही चीज हमेशा के लिए सनातन हो जाती है। बाकी चीजें ऊपरी-2, बुद्धि की चीज ऊपरी-2 रह जाती हैं। लेकिन जो चीज हृदय को छू जाती है जो हृदय स्पर्शी है वो ही चीज हृदय में बैठ जाती है। इस चीज को आप गांठ बांध कर रखिये कि श्री गणेश का स्थान है तो मूलाधार पे पर जब वो आपके हृदय में आ जाता है तभी वो आत्मास्वरूप हो करके चैतन्यमय हो जाता है। आत्मा जो है वही श्री गणेश है और वही श्री गणेश जब हमारे हृदय से प्रकाश देता है तो वही चैतन्य है। जिसने श्री गणेश को अपने हृदय में बिठा लिया उसके लिए फिर कुछ कहने की जरूरत नहीं। उसका कहते हैं कि हर समय निरानन्द में डूबा रहता है। उसे और चीजों की खबर ही नहीं होती न परवाह रहती है। और

रिद्धि-सिद्धि सब उसके पैर के पास। वो खुद जानता भी नहीं, सोचता भी नहीं। सारे काम अपने आप होते रहते हैं। ये अनुभव सिद्ध है। ये मैं बात ऐसी-वैसी नहीं कह रही हूँ। ये अनुभव सिद्ध है। आप लोग जानते हैं, मेरे बारे में जानते है वो आपके बारे में क्यों नहीं होना चाहिए? अभी तो हमों आपके लिए रिद्धि-सिद्धि बने आपके पीछे-2 घूम रहे हैं। पर सबका समय होता है। आपको भी अपनी मंजिल को छोड़ करके दूसरी और मुड़ना नहीं चाहिए। अपनी नजर उन्नत करके उस और जाना चाहिए जहां आपको जाना है और जिसे आपको प्राप्त करना है। ये ऐसा आज तक कभी हुआ नहीं था। और जो हो रहा है उसको अगर आप भूल जाएंगे तो इसमें दोष हमारा नहीं। और इसकी सजा हमें देने की जरूरत नहीं। श्री गणेश बैठे हैं वहां फर्सा ले करके।

इसलिए अपनी ओर दृष्टि करें। अपने अन्दर वो गाम्भीर्य श्री गणेश की जो शक्ति है वो गाम्भीर्य, जैसे अपने अन्दर वो आनन्द का गाम्भीर्य लाएं। आनन्द एक सागर जैसे गम्भीर है। ऐसे गम्भीर आत्मा को देखते ही मनुष्य पुलकित हो जाए आनन्द से भर जाए। फिर तो आप ही के दर्शन से काम हो जाएगा। मेरी तकलीफें बहुत कम हो जाएंगी। और मुश्किलें आधी पड़ेगी और यही एक निश्चय करके आप पूजा करें कि वही हम स्थिति लाने वाले हैं। और आज विशेषकर गोरी की पूजा है। कुण्डलनी की पूजा है। जो हमें शक्ति चालना देती है। जो गणेश को ही वो शक्ति देती है जिसके कारण वो चलायमान है। और अब निराकार वही वो गौरी है। तो हम शक्ति के पुजारी हैं और जो शक्तिशाली नहीं है निशक्त है। जो अपनी शक्ति की पूजा नहीं करता और अपने अन्दर वो शक्ति को जगाता नहीं और उसमें रम मान नहीं होता और उसका प्रकाश नहीं देता है उसके लिए अपने को सहजयोगी कहना व्यर्थ है। ऐसे तो कोई भी अपने को सहजयोगी कह सकता है। तो ये लेबल लगाने की बात नहीं है अन्दर की बात है। अन्तर्गत की, हृदय की बात है। इसको हृदय से प्राप्त करना चाहिए। हृदय में उतारना चाहिए। और जितनी भी समाज में, राजकरण में, बाहरी बातें हैं उनको अपने अन्दर नहीं घुसने देना चाहिए। क्योंकि सब लोग ऐसा करते है सो

हम भी ऐसा करते हैं। ये सहजयोग है इसमें आपका अपना व्यक्तित्व है। ये नहीं की अपना व्यक्तिगत है। व्यक्तिगत नहीं है व्यक्तित्व है। हम सहजयोगी हैं। हम लोग क्यों करे जो दुनिया करती है। हम इसे नहीं करने वाले। जब तक आप लोग इस हिम्मत के साथ आगे नहीं बढ़ेंगे सहजयोग यहां पर कोई पहाड़ नहीं खड़े कर सकता। दलदल शायद खड़ी हो जाए तो हो जाए। माँ के मनसूबे बहुत हैं। और मेहनत भी बहुत किया है हमने। कुछ मेहनत में कमी नहीं की। लेकिन अब चाहते हैं कि आप लोग इधर ध्यान दें। और अपने को समाधान में रखें। लेकिन उसका मतलब यह नहीं कि मुँह पर मुस्कराहट लाकर की हम बड़े समाधानी हैं। नहीं, समाधान को अन्दर तोलें, क्या हम वास्तव में समाधानी है? आशा है आप लोग सब पूरी तरह से ध्यान करेंगे और ध्यान की ओर अपना पूरा सर्वस्व लगाएंगे। तभी काम बनने वाला है। जब आपके अन्दर ये शक्तियाँ आ जाएँगी तो आप कहेंगे माँ हम तो सारे पहाड़ों से ऊँचे हो गए। सारे पेड़ों से भी ज्यादा हरित हो गए। इस पृथ्वी से भी हम विशाल हो गए। जैसे तुकाराम ने कहा था कि मैं तो दिखने में छोटा हूँ लेकिन आकाश जितना

बड़ा हूँ। ये जब तक आपके अन्दर नहीं होता तो फायदा क्या सहजयोग में आने का। आज की बातों पे आप कृपया ध्यान दे और उधर चित्त करें। और पूरे मन से आज यही पूजा करें श्री गणेश की कि हम गौरी माँ के सहायता से, उसकी शक्ति के साथ उस निराकार में उतरें। जहां हम पूर्णतया आनन्द में रहें। और हमारे रोम-रोम में वो शक्ति ऐसी बहे की लोग दुनिया में जानें की सहजयोग ने क्या कमालात किये। और कमाल को पूरी तरह से हासिल कर लेना, उसे गौरव कहते हैं। वो चीज आप में आनी चाहिए। सहजयोग में हममें गौरव आया है या नहीं ये खुद निर्णय करना चाहिए। और हर-एक आदमी कर सकता है। उसको पढ़ने-लिखने की किसी चीज की, किताब की जरूरत नहीं। सिर्फ शुद्ध इच्छा की जरूरत है जो हमें अपने अन्दर रखनी चाहिए। आशा है आज आप पूजा में इसे प्राप्त करेंगे। महान शक्ति के साथ ही आप बाहर जाइये। छोटी-छोटी बातों को छोड़-छाड़ के आप महान शक्ति को प्राप्त करें। सब अपने आप ही ठीक होने वाला है। परमात्मा आप सबको आशीर्वादित करें।

MARATHI TRANSLATION

(Hindi Talk)

Scanned from Hindi Chaitanya Lahari



श्री गणेश गौरी पूजा

प.पू.श्रीमाताजी
निर्मलादेवींचे भाषण
मुंबई : १८ सप्टेंबर ८८

परमेश्वराने विश्वनिर्मितीची सुरुवात केली तेव्हा प्रथम ओम्कार नाद उमटला. त्यावेळीं परमात्म्याने सृष्टीमध्ये सर्वप्रथम पवित्रतेचे संचरण घडवले. त्याच चैतन्याची जाणीव आज तुम्हाला होत आहे; त्याचा अनुभवही तुम्हाला मिळाला आहे. हा चैतन्यस्वरूप ओम्कार आजही आपल्याला पवित्र करत आहे.

आज आपण श्रीगणेशांची पूजा करणार आहोत. साधारणपणे पूजा करताना बरेच लोक मनात काहीतरी कामना बाळगून पूजा करतात; नोकरी मिळावी, व्यवसाय वाढावा, मान-सन्मान केला जावा, घर व्हावे इ. अनेकानेक कामना माणूस बाळगत असतो. सिद्धिविनायकाची पूजा करतानाही लोक त्याच्याकडे अनेक मागण्या करतात. पण सिद्धिविनायक ही काही वस्तू प्रदान करणारी देवता नाही; त्यासाठी जगात सगळीकडे अनेक धंदे करणारी वा उपाय सांगणारी मंडळी आहेत.

आज जरी आपण श्रीगणेशांची साकार पूजा करणार असलो तरी तुम्ही आपल्या जीवनाचे अंतिम लक्ष्य काय आहे हे विसरता कामा नये. ते शिखर आपण गाठले आहे का याचा विचार तुम्ही जाणीवपूर्वक केला पाहिजे. अर्थात या पूजेपासून आपल्याला काय मिळवायचे आहे याचा नीट विचार केला पाहिजे. आज ज्या श्रीगणेशांची पूजा आपण करणार आहोत त्याचे निराकार स्वरूप आपल्याला ओळखायचे आहे व त्याची स्थापना आपल्यामध्ये करायची आहे. नुसते -जय जय- करून काहीच मिळणार नाही, ते तर इतर सारेच जण करतात श्री गणेशांची पूजा, श्री मातार्जीची पूजा, गौरीची पूजा सर्व सर्व झाले, पण त्यांची शक्ती आपल्यामध्ये संचारित झाली का त्या शक्तीचा प्रभाव आपल्या मन-बुद्धी-चित्त-वाणी इ.मध्ये झाला का, त्यांची शुद्धी झाली का हे नीट पाहिले पाहिजे. हेच तुम्ही दुसऱ्यांनाही देऊ शकता; त्यासाठीच तुम्हाला आत्मसाक्षात्कार दिला आहे.

श्रीगणेशांची पूजा करतांना तुम्हाला निराकारातून एकाकारिता मिळवली पाहिजे. आपण सारखे साकाराकडे जास्त लक्ष देतो. सहजयोग्यांनी निराकारामधूनच सर्व साधना व कार्य करायचे आहे. हेच निराकारामधून कार्य करण्याचे माध्यम आहे. एरवी ते होणार नाही. श्रीगणेशांना प्रसन्न करून घेण्यासाठी आधी आपण पूर्णपणे शुद्ध होणे आवश्यक आहे. त्यासाठी जीवनात ज्या मौलिक गोष्टी म्हणून समजल्या जातात त्यांच्याकडे लक्षपूर्वक ध्यान दिले पाहिजे. आजकालच्या सिनेमासारख्या वाईट गोष्टींमुळे आपली नजर खराब झाली आहे; आणि परिणाम म्हणून अबोधितता,

निर्व्यजिता, निश्चलता क्षीण होत आहेत या सर्वांचा एकच अर्थ निघतो की श्रीगणेशांचे मूळ (basic) गुणच आपण लक्षात घेतले नाहीत व आचरणात आणले नाहीत.

म्हणून सहजयोग्यांनी प्रामुख्याने लक्षात घेण्याची गोष्ट म्हणजे आपल्याला मिळालेली शक्ती विकसित होऊन जिवंत राहिल याची काळजी घेतली पाहिजे. आपल्यामधील गौरी-स्थिती (कौमार्य पवित्रता) सांभाळली पाहिजे व तिचा गौरव राखला पाहिजे. हे जमले नाही तर सर्व फुकट जाईल. आजकाल बहुसंख्य लोक वाटेल त्या स्त्रीच्या मार्गे, जिच्यामध्ये पवित्रतेचा अंशदेखील नाही अशा स्त्रियांच्या मार्गे लागतात. ही सर्व नरकांत जाणाऱ्या लोकांची लक्षणे आहेत. मला तर हे स्पष्ट दिसत आहे. पण तुम्ही लोक अल्पसंख्य असलात तरी तुम्ही त्यांच्या नादी लागूनका, ते तुम्हाला शोभणार नाही. म्हणून कमीत कमी आपली नैतिकता आपणच सांभाळली पाहिजे.

काही लोकांवर विशेषतः परदेशातून आलेल्या लोकांवर भौतिक जीवनाचा पगडा असतो; नीतिमत्तेला ते फारसे मानत नाहीत, प्रत्येक दुकानाबद्दल, जाहिरातीबद्दल त्यांना आकर्षण वाटते. म्हणून निराकार समजण्याची शक्ती तुम्ही मिळवली पाहिजे. नाहीतर तुम्हाला सहजयोगी कसे म्हणायचे? आता तुम्ही जे कोणी झाले आहात त्याची शान राखलीच पाहिजे; राजा जनकही बाहेरून राजासारखेच व्यवहार करायचे. जोपर्यंत भौतिकतेचा पगडा व आकर्षण असेल तोपर्यंत हे जमणार नाही. मी तुम्हाला सर्व काही पुरवते कारण माझे तुमच्यावर प्रेम आहे; पण माझ्या दृष्टीने ती काही विशेष गोष्ट नाही. हे सर्व शब्दांत सांगणे अवघड आहे; माझा कटाक्षही तुमच्या लक्षात येणे अवघड आहे. मी करते म्हणून तुम्ही लोक तेच मागत रहा. असा याचा अर्थ नाही. त्यांतूनही मी दिलेल्या गोष्टीऐवजी काही मागणारे पण आहेत. शबरीची उष्टी बोरंही रामाने आनंदाने खाल्ली पण तुमचे असे वागणे पाहून मलाच आश्चर्य वाटते.

श्रीगणेशांचे आशीर्वाद मिळण्यासाठी सर्वप्रथम तुम्ही तुमचे चित्त शुद्ध केले पाहिजे. स्वच्छ केले पाहिजे; परमात्म्याकडे न लागता ते इकडे तिकडे धावत असेल तर त्याचा काही फायदा नाही. जोपर्यंत तुमचे चित्त स्वच्छ, शुद्ध होणार नाही तोपर्यंत ज्ञान मिळवू शकणार नाही. हे चैतन्य चित्तामधून वहात असते; चित्तामधूनच तुम्हाला ज्ञान मिळणार आहे. चित्त शुद्ध असते तेव्हा विचार-माध्यमातून कार्य होत असते. चित्तामधूनच, ध्यान, दिल्यावरच कार्य होऊ शकते. कधी कधी तर त्याचीही गरज पडत नाही. जे तुमचे ध्येय आहे त्याला लागणारी शक्ती या चित्तामधूनच परमचैतन्याकडून मिळणार आहे. त्यातून खूप कार्य तुम्ही करू शकता. ही मुख्य गोष्ट सोडली तर सहजयोगात येण्याचा काय फायदा? सहजयोग मिळाल्यावरही त्यांतून आर्थिक फायदा कसा होईल इकडे चित्त जात असेल तर सर्व खटपट व्यर्थ आहे. काही असेही आहेत की पूजेच्या कार्यक्रमाला फक्त पूजेसाठी लांब-लांबच्या गावाहून लोक येतात; आणि वर म्हणतात-श्रीमाताजींच्या दर्शनासाठी फक्त आलो-आणि वर फालतू गप्पा करत रहातात. खऱ्या सहजयोग्याला श्री माताजींचे दर्शन स्वतःच्या हृदयांतच झाले पाहिजे. ती शक्ती मी तुम्हाला दिली आहे. मी खरं म्हणजे शक्तीच आहे म्हणून मला निराकारांत तुम्ही प्राप्त करून घ्या; तुम्ही स्वतः शक्तीस्वरूप होऊन त्या शक्तीमध्ये रममाण झाले पाहिजे. पण हा विचार सहसा माणसाच्या मनात येत नाही, - मी..मी..माझे..माझे यांतच ते अडकून राहतात. उलट तुम्ही स्वतःला -मा के बेटा-बेटी-आहोत असे का नाही समजत? सहजयोगात आल्यावर तुमचा धर्म-जात, गोत्र... सर्व काही बदलले आहे आणि नवीन जन्म झाला आहे हे नीट लक्षात घ्या. श्रीगणेशांकडे पहा; ते मातेला पूर्णपणे शरणागत व श्रद्धाशील आहेत, ते तुमच्या हृदयात उतरण्यासाठी चित्त शुद्ध असणे फार आवश्यक आहे. शुद्ध चित्तामधूनच तुम्ही मला पाहू शकाल. चित्त अशुद्ध असेल तर तुम्हाला त्रासच होणार.

चित्त शुद्ध होते तेव्हा तुम्हालाच आश्चर्य वाटेल असे सुगंधी फुलासारखे तुम्ही बनाव आण मी पण माझा सुंदर बेटा पाहून प्रसन्न होईन. तुम्ही भारी कपडे व पेहराव करून माझ्यासमोर आलात तरी मी इतकी प्रसन्न होणार नाही. असे व्यक्तिमत्त्व प्राप्त करण्यासाठी श्रीगणेशांची आराधना करा; श्रीगणेशांची संस्कृती म्हणजेच सौंदर्य. लोकमान्य टिळकांनी सामाजिक स्तरावर गणेशोत्सव का सुरू केला याचा विचार करा. श्रीगणेशांचे सौंदर्य म्हणजे बालकासारखा त्यांचा स्वभाव. अबोधितता आणि निरागसता यांचा परिपूर्ण आविष्कार. या स्वभावातच सर्व सौंदर्य आणि मोहकता भरलेली आहे; एरवी आपली चलाखी, नटणे-मुरडणे, स्मार्टनेस हे सर्व क्षणभंगुर आहे; तोंडावर त्याची स्तुति होईल पण पाठीमागे निंदाच होणार. श्रीगणेशांची अबोधितता सान्या विश्वातील सौंदर्य व्यापून आहे. श्रीकृष्ण, श्रीराम, ईश्वर या सर्वांमध्ये अशा लहानपणची लीला दिसून येते. तुम्हाला खरा आनंद अनुभवायचा असेल तर सर्वप्रथम श्रीगणेशांसारखे बनले पाहिजे. आजच्या पूजेनंतर याचाच विचार करा. श्रीगौरीचे संचारण आपल्यामध्ये मिळवले तर श्रीगणेश समजणे सोपे आहे. म्हणून आधी श्रीगौरीची पूजा.

पूजेमधून हे सर्व मिळवायचे आहे म्हणून मी वर चित्तशुद्धीबद्दल बोलले. चित्तामधून विचार करून हे सर्व तुम्ही मिळवले पाहिजे. त्यासाठी चित्तामध्ये काय विचार चालले आहेत इकडे सावधपणे लक्ष द्या. पतंग उडवणाऱ्या मुलाचे बरोबरच्या मित्रांबरोबर गप्पा-विनोद करतानाही पतंगाच्या हालचालीकडे लक्ष असते. तसे हे हवे. सिंहासनावर बसलेल्या राजासारखे रहायला शिका. श्रीगणेशांची शक्ती मिळवायची असेल तर तुमचे सर्व लक्ष निराकारावर, आपल्यामधील प्रवाहित चैतन्यावर असले पाहिजे. ज्याचे चित्त-चैतन्यशुद्ध नाही तो भूक लागली असे म्हणतो. तुम्हाला मी माझ्यामध्ये धारण केले आहे,

मग असे कसे होईल? मी तुमच्या स्वच्छतेकडे लक्ष देते पण तुम्ही स्वतः स्वतःला स्वच्छ कधी करणार? कुणी म्हणतो-माझी आज्ञा पकडली आहे, माझा अहंकार वाढला आहे- हे कां होते? करणारा जर परमात्मा आहे तर हे कसे शक्य आहे? याला कारण म्हणजे आपण दुसऱ्याचे दोष पहातो व काढतो पण स्वतःच्या कमतरतेकडे लक्ष देत नाही. त्याचप्रमाणे आपली वाणी पण शुद्ध असली पाहिजे. सहजयोगातही शिव्या देणारे, आरडाओरड करणारे, बोलण्यामध्ये माधुर्य नसलेले असे लोकही आहेत; वाणी शुद्ध नाहीच आणि वर आणखी दांभिकता; वरवरचे रूप वेगळे पण आतून हृदय स्वच्छ नाही. जोपर्यंत आपले हित कशात आहे हे लक्षात घेतले जात नाही, फालतू गोष्टींमध्ये आपण अडकून राहतो. जोपर्यंत स्वतःसंपूर्ण होण्याकडे दृष्टी ठेवत नाही तोपर्यंत चित्त शुद्ध होणार नाही. एक-दोन लोक असे शुद्ध(आलोकित)होऊन चालणार नाही तर सामूहिक स्तरावर हे कार्य झाले पाहिजे; त्याची आज फार जरूर आहे. नाही तर समस्त समाज कसा सुधारेल? प्रत्येकाने आपली या महान कार्यासाठी निवड झाली आहे हे भान सतत राखले पाहिजे; त्यासाठीच तुमचे शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, प्रापंचिक असे सर्व प्रश्न सोडवले जात आहेत. पण पुढे काय? मला प्रत्येक अडचणीसाठी साकडे घालण्याची जरूरी नाही, सहजयोगातून तुम्ही तुमचे प्रश्न सोडवले पाहिजेत. तुम्हाला तुमच्यामध्येच असलेल्या शक्तीला प्रकट करायचे आहे तुम्हीच तुमच्या प्रश्नांची व अडचणींची उत्तरे दिली पाहिजेत, माझ्यापर्यंत सर्व प्रश्न आणण्याची जरूर नाही. म्हणून या शक्तीचे संचारण झाले पाहिजे; तुमच्या मनामध्ये बुद्धीमध्ये हे संचारण व्हायला हवे म्हणजे सर्व प्रश्न सुटतील. शंकराचार्य, ज्ञानेश्वर, तुकाराम यांना काय मी सांगितले? त्यांनीच या शक्तीच्या संचारणामधून कार्य

केले. साकारामध्येच जर तुम्ही तू सहािलात तर पुढे प्रगती होणार नाही. निराकाराला आपल्यामध्ये ओळखा व प्राप्त करून घ्या आणि खऱ्या अर्थाने स्वतःचे गुरू बना. जन्मभर शाळेतच शिकत राहिलात तर पुढे नोकरी कशी मिळणार? परमात्म्याच्या कार्याचे तुम्हाला माध्यम बऱ्याच असेल तर तुमच्यामधील सर्व दोष दूर झाले पाहिजेत. सहजयोगाची, सर्व चक्रांची, सर्व व्यवस्थेची माहिती तुम्हाला मिळाली आहे; नुसते ते वाचून वा मंत्र जपून हे होणार नाही. उदा. ज्याला आपला राग आवरता आला नाही तो सहजयोग काय करणार?

त्यासाठी आपल्यामधील श्रीगणेशांची शक्ती जागृत करून तुम्हाला पवित्र व्हायचे आहे. त्याच्या आड काही येत असेल तर तुमचेच भूत! चिडायचं, रागवायचं, दुसऱ्याला मारायचं हे गणेशशक्तीचे काम नाही. अशा व्यक्तीने सहजयोग सोडून पागलखान्यात जावे. सहजयोगात जे लोक स्वतःला मोठे समजतात आणि असे वागतात त्यांची तोंडावर स्तुती केली जात असली तर पाठीमागे निंदाच होते. असे लोक सहजयोगातून बाहेर फेकले जातात. तुमची वाणीही अत्यंत स्वच्छ, सुंदर आणि मधुर असली पाहिजे; त्याच्या मागे काही कपट नको. सर्व काही शुद्ध हृदयापासून झाले पाहिजे. हृदयस्पर्श असला की सर्व काही हृदयापर्यंत पोचते. ही गाठ पक्की बांधून घ्या; श्रीगणेश मूलाधारात असले तरी हृदयात आल्यावर आत्मस्वरूप होऊन चैतन्यमय होतात. श्रीगणेश आत्माच आहेत व त्यांचा प्रकाश जेव्हा हृदयात उतरतो तेव्हाच चैतन्याचा निरानंद मिळतो. तुम्ही प्रत्येकजण ही शक्ती मिळवू शकता; हृदयात ज्याने श्रीगणेशांना स्थापित केले आहे त्याला काही सांगण्याची जरूर नाही; असा माणूस सदासर्वकाळ निरानंदामध्ये रममाण असतो. म्हणून तुम्ही आपली दृष्टी उन्नत अशा ध्येयाकडे ठेवा. हे असे कार्य आजपर्यंत कधी झाले नाही; तुम्हाला ती सिद्धी मिळूनही तुम्ही ते प्राप्त करून घेतले

नाही तर त्यात माझा काही दोष नाही. तुम्ही जर ते मिळवू शकला तर एक सुंदर, गंभीर, तेजस्वी स्वरूप मिळून आत्म्याला पुलकित करू शकाल हाच निश्चय करून आजची पूजा करा; त्यातही गौरीपूजा महत्त्वाची कारण गौरी हीच शक्तिचालना देणारी कुण्डलिनी आहे; तीच तुम्हाला साकारामधून निराकारापर्यंत पोचवणार आहे. आपण सर्व या शक्तीचे पुजारी आहोत. जो निःशक्त (शक्तीशाली नसलेला) आहे तो ही पूजा करू शकत नाही. या शक्तीला जागृत न करणारा व त्याचा प्रकाश प्राप्त करून न घेणारा स्वतःला सहजयोगी म्हणवून घेऊ शकत नाही. -सहजयोगी- असे लेबल लावून घेण्याची ही गोष्ट नाही, हृदयाची (अंदर की) गोष्ट आहे, ती हृदयापासून प्राप्त होणारी आहे, हे राजकारण करण्यासारखे नाही; हा सहजयोग आहे, त्यात व्यक्तित्व आहे (व्यक्तिमत्त्व नव्हे). सहजयोग्याची ही एक पर्सनॅलिटी आहे. जोपर्यंत हिंमत बाळगून आपण पुढे जाणार नाही तोपर्यंत सहजयोग बळकट होणार नाही.

मी माझ्याकडून खूप मेहनत घेतली आहे, खूप कष्ट केले आहेत. आता तुम्ही ते समाधान (Solid) मिळवले पाहिजे. आशा आहे की तुम्ही सर्वस्व अर्पून ध्यान-धारणा कराल; तरच कार्य होईल. या स्थितीला तुम्ही आलात की तुम्हीच म्हणाल -आम्ही पहाडापेक्षाही मोठे झालो-जसे तुकाराम म्हणाले होते-तुका झाला आकाशाएवढा- सहजयोगांत येऊन हेच मिळवायचे आहे.

माझे सांगणे ध्यानपूर्वक समजून घ्या, चिंतांत साठवून घ्या आणि याचसाठी आजची पूजा व निराकर बनवण्यासाठी गौरीमातेला प्रार्थना करा. सहजयोगांत आपण किती परिपक्व झालो (Excellence) हे स्वतःच पहा व जाणून घ्या; हीच शुद्ध इच्छा बाळगा.

सर्वांना अनंत आशीर्वाद.

• • •